प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 36 * MAY 2010 – b *

SN	Title	Min	Coding	Contents	
1	May 21. Mp3	*54*		**शब्दब्रहम**-ओंकार का निरूपण, दृश्यमान नामरूप जगत ओंकार है, दृष्टा व्यापक ब्रह्म हमारा स्वरूप है ओंकार से भगवान दर्शन	Im A
2	May 22. Mp3	*36*		ब्रह्म का स्वरूप व तटस्थ लक्षण ,सृष्टि-अध्यास अध्यारोप अपवाद प्रक्रिया,चेतन प्रेरणा से सु०रूपी माया से स्व०जा०जगत उत्पत्ति	Im I
3	May 23. Mp3	*43*	Poor Recording	ओंकार ही प्रणव-प्रकृति या जा०स्व०सु०माया है, जिससे इनकी उत्पत्ति स्थिति प्रलय होती है एवं जो इनका जानने वाला ब्रह्म है	Im B
4	May 24. Mp3	*35*		ब्रह्म का स्वरूप एवं तटस्थ लक्षण,सृष्टि-अध्यास अध्यारोप अपवाद प्रक्रिया,जीव-ब्रह्म का संबन्ध/स्वरूप - अवान्तर एवं महावाक्य	Im 2
5	May 25. Mp3	35		गीता १३/२-३:तीर्थस्थान की महिमा,संत दर्शन एवं सतसंग का महात्म्य, क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विवेचना व ज्ञान ही संपूर्ण ज्ञान है क्षेत्रज्ञ ब्र०है	*
6	May 26. Mp3	31		भगवान के सतू/निनि० एवं असत/ससा० स्वरूप निरूपण, भगवान के सगुण साकार स्वरूप - अवतार का प्रयोजन	***
7	May 27. Mp3	00		प्रवचन अनुपलब्ध	NA
8	May 28. Mp3	34		निश्प्रपंच भगवान के ज्ञान के लिये मिथ्या प्रपंच का अध्यास अपवाद प्रक्रिया इष्ट है-विभिन्न उपनिषदानुसार विभिन्न सृष्टिक्रम	***
9	May 29. Mp3	46		**ज्ञान की ७ भूमिकाऐं**-सुभेच्छा,विचारणा,तनुमानसी-निधि०,सत्वापत्ती-स्व०, ब्रह्मविदवर-निद्रा०,ब्र०विदवरियाान-गाढ़नि०,ब्र०विदवरिष्ठ	*A*
10	May 30. Mp3	00		प्रवचन अनुपलब्ध	NA
11	May 31. Mp3	49		ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति, ज्ञान की ७ अवस्थाऐ/भूमिकाए :- १ सुभेच्छा,, २ विचारणा - गुरु की शरण में ब्रह्म का विचार	*B*
12	May 32. Mp3	41		भगवान के ज्ञान में प्रतिबन्ध - मल विक्षेप आवरण, निवारण हेतु त्रि०वेद, वर्णाश्रम पदानुसार वेदविहित निष्काम कर्म, सामान्य धर्म	*
13	May 33. Mp3	44		सामवेद महोपनिषद-**ज्ञान की ७ भूमिकाऐं**-१ सुभेच्छा २ विचारणा ३तनुमानसी ४सत्वापत्ती ५असनशक्ति ६पदार्थाभावना ७तुरीयग्राह	*C*
14	May 34. Mp3	43		ब्रह्म का स्वरूप एवं तटस्थ लक्षण, **ज्ञान की ७ भूमिकाए** -१ सुभेच्छा २ विचारणा ३ तनुमानसी-निधि० ४ सत्वापत्ती-स्वरूप ज्ञान	*D*
15	May 35. Mp3	30		**जीव का सच्चा स्वरूप सच्चि० ब्रह्म ही है,** सभी शरीर मन्दिर हैं,व हृदय रूपी सिंघासन पर अद्वितीय चेतन देव ही विराजमान हैं	Imp
16	May 36. Mp3	46		**ज्ञान की ७ भूमिकाऐं**-१सुभेच्छा २विचारणा ३तनुमानसी-निधि० ४सत्वापत्ती-स्वरूप ज्ञान ५असनशक्ति ६पदार्थाभावना ७तुरीयग्राह	*E*
17	May 37. Mp3	45		अर्थव वेद **महोपनिषद-ज्ञान की ७ भूमिकाऐं**-१सुभेच्छा २विचारणा ३तनुमानसी-निधि० ४सत्वापत्ती-स्वरूप ज्ञान ५असनशक्ति	*F*
18			विशेष एवं मूल्यवान	६पदार्थाभावना ७ तुरीयग्राह भूमिकाओं की समावस्थाऐं एवं संज्ञाऐं :- १ २ ३ - जागृत अवस्था, ४-स्वप्नवत् : ब्रह्मविद, ५-निद्रावत् : ब्रह्मविदवर, ६-गाढनिद्रावत् : ब्रह्मविदवरीयान् ७-प्रगाढनिद्रावत् : ब्रह्मविदवरिष्ठ	****